B.A-I Paper-II

Page No.: YOUVA
Date: 10/07/2020

व्यवहार चिकित्सा

व्यवहार चिकित्सा का विकास पैवलव एवं स्कीनर के सिद्धान्तों पर हुआ है। इस चिकित्सा पद्धति की मान्यता यह है कि असामान्य व्यवहार का कारण पूर्ण समायोजित व्यवहार को ना सीख पाना या कुसमायोजित व्यवहार को सीख जाना है।

इस चिकित्सा पद्धति में रोगी का समायोजित व्यवहार करने एवं कुसमायोजित व्यवहार को न करने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

व्यवहार चिकित्सा में कलासिकी अनुबंध, नैमित्तिक अधिगम एवं क्रिया प्रसूत अनुबन्ध के नियमों का उपयोग किया जाता है।

व्यवहार चिकित्सा की प्रमुख प्रविधियाँ निम्न हैं—

(1) मॉडलिंग — यह प्रविधि प्रेक्षण सीखना से सम्बन्धित है। इस प्रविधि में रोगी के इर्द-गिर्द रहने वाले लोगों द्वारा बार-बार समायोजित व्यवहार किया जाता है। रोगी अपने इर्द-गिर्द होने वाले व्यवहार का प्रेक्षण बार-बार करता है इससे वह समायोजित व्यवहार करना सीख जाता है।

Scanned with CamSc

Date:

(ii) फ्लडिंग — इस चिकित्सा पद्धति में रोगी को ऐसे उद्दीपक या परिस्थिति में रखा जाता है जिस परिस्थिति में वह असामान्य व्यवहार करता है। रोगी को वैसे उद्दीपक के साथ बार-बार अन्तःक्रिया करवाया जाता है जिस उद्दीपक के कारण उसमें असामान्य व्यवहार उत्पन्न होता है। वास्तविक रूप में उस परिस्थिति या उद्दीपक का सामना करने पर वह सीख जाता है कि वह परिस्थिति या उद्दीपक वैसी नहीं है जैसा वह समझता था।

(iii) विरुचि चिकित्सा — यह चिकित्सा पद्धति क्लासिकी अनुबन्धन के नियम पर आधारित है। इस चिकित्सा पद्धति में रोगी द्वारा किए गए असामान्य व्यवहार के बाद उसे दण्ड या बिजली का आघात या जोर की आवाज आदि दिया जाता है। इसमें रोगी में विरुचि उत्पन्न होती है अर्थात कुसमायोजित व्यवहार के प्रति रोगी में विरुचि उत्पन्न की जाती है। जिसमें रोगी धीरे-धीरे कुसमायोजित व्यवहार करना छोड़ देता है।

Scanned with CamSc

(iv) क्रिया-प्रसूत सम्बन्धन प्रविधि — इस प्रविधि में पुनर्बलन के द्वारा रोगी को समायोजित व्यवहार करना सिखाया जाता है।

गुण — * व्यवहार चिकित्सा के उपयोग में कम समय एवं कम खर्च लगता है।

* इस चिकित्सा पद्धति का उपयोग हेतु अधिक योग्य चिकित्सक की आवश्यकता नहीं है। इस विधि का उपयोग साधारण चिकित्सक भी कर सकते हैं।

दोष — * व्यवहार चिकित्सा द्वारा किए गए रोग का उपचार स्थाई नहीं होता है। कुछ समय पश्चात रोग के लक्षण पुनः प्रकट होने लगते हैं।

* सभी प्रकार के मानसिक रोगों का उपचार इस चिकित्सा पद्धति द्वारा संभव नहीं है।

उपरोक्त दोषों के बावजूद आधुनिक नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा इस चिकित्सा पद्धति का उपयोग काफी किया जाता है।

Scanned with CamSc